Gazettes & Debates Section
Parliament Library Building
Room No. FB-025
Block 'G'
Acc. No. 25003
Dated 20.11.2014

THE
PARLIAMENTARY DEBATES
(Part II—Proceedings other than Questions and Answers)
OFFICIAL REPORT

HOUSE OF THE PEOPLE

Friday, 16*th May*, 1952

The House met at Twelve Noon

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

QUESTIONS AND ANSWERS

(*No Questions*: *Part I not published*.)

MEMBERS SWORN

Shri Bhawanji A. Khimji [Kutch West]

Jonab Amjad Ali [Goalpara-Garo Hills]

Shri Chandrashanker Bhatt [Broach]

Shri B. Das (Jajpur-Keonjhar): I suggest that the Secretary should call out the names of Members who take the oath. I am afraid we cannot hear their names distinctly.

Mr. Speaker: Hon. Members while taking the oath read out their names themselves.

Shri B. Das: They do not speak loudly.

Mr. Speaker: The complaint is that they do not speak loudly. Very well, next time we shall do that.

PAPERS LAID ON THE TABLE.

PRESIDENT'S ADDRESS

Secretary: I beg to lay on the Table a copy of the President's Address to both Houses of Parliament assembled together this morning.

राष्ट्रपति: संसद् के सदस्यो, भारतीय गणतन्त्र की इस पहली संसद् के, जो हमारे संविधान के अनुसार चुनी गई है, सदस्यों की हैसियत में आप लोगों का मैं यहां स्वागत करता हूं। विधान सभाओं की रचना और राज्य के अधिपति सम्बन्धी संविधान के उपबन्धों का हमने पूरी तरह से अमल दरामद कर दिया है और इस तरह अपने सफर की एक मंजिल पूरी कर ली है। जैसे ही यह मंजिल समाप्त होती है दूसरी मंजिल शुरू हो जाती है। किसी भी जाति या राष्ट्र के लिये अपने आगे की यात्रा में आराम से बैठने की कोई जगह नहीं होती। हमारी जनता में के १७ करोड़ से अधिक द्वारा नवनिर्वाचित आप संसद् के सदस्य ऐसे यात्री हैं जिन्हें उनके साथ साथ आगे बढ़ना है। आपका यह बड़ा सौभाग्य है और आपकी भारी जिम्मेदारी है।

इस ऐतिहासिक मौक़े पर जब मैं आपके सामने बोल रहा हूं मुझे अपने प्राचीन देश और उस में बसने वाले करोड़ों नर नारियों के बड़े भाग्य का कुछ आभास है। भाग्य हमें बुला रहा है और यह हमारा काम है कि हम उसके निमन्त्रण को स्वीकार करें। वह आवाहन तो महान् देश भारत की, जिसने कि इतिहास के ऊषाकाल से ही, जब कि सहस्रों वर्ष पूर्व उसकी कहानी शुरू हुई थी, सुदिन और दुर्दिन दोनों ही देखे हैं, सेवा के लिये है। इस दीर्घ काल में इस देश को महान् गौरव भी मिला और हमारा भाग्य विपत्तिमय भी रहा। अब जब कि हम भारत